सुसमाचार: ईश्वर की मुक्ति योजना

जब तक अन्यथा नहीं लिखा गया हो, बाइबिल उद्धरण The New American Standard Version of the Bible, कॉपीराइट © 1977 थॉमस नेल्सन, इंक.
कॉपीराइट © 2020 जॉन एफ. बॉनेल

सामग्री

परिचय

ईश्वर

मनुष्य

विश्वास

यीशु

अनंत

निष्कर्ष

परिचय

सुसमाचार

प्रिय पाठक,

इस पुस्तिका को पढ़ने के लिए आपका धन्यवाद। यदि आप परमेश्वर को मौका देंगे, तो वह आपके जीवन को बदल सकता है।
हम सभी के पास समय होता है—प्रतिदिन चौबीस घंटे। हम इसे अपने कैलेंडर में गिनते हैं, अपनी सालगिरहें, जन्मदिन और अन्य ऐतिहासिक क्षण दर्ज करते हैं। बस फर्क इतना है कि कुछ लोग बुढ़ापे तक जी जाते हैं, जबकि कुछ दुर्भाग्यवश जवान ही इस दुनिया से चले जाते हैं।
लेकिन हम समय क्यों गिनते हैं? हम किसके आभास के लिए उलटी गिनती कर रहे हैं? जवाब है—न्याय का दिन। उस दिन पूरे मानव इतिहास को परमेश्वर के सामने अपना जीवन-लेखा देना होगा। कुछ स्वर्ग जाएंगे, बाकी नरक में अपना भाग्य भोगेंगे और परमेश्वर के क्रोध का अनुभव करेंगे।
कई लोग कहते हैं कि वे ईश्वर में नहीं मानते, या यीशु महज एक अच्छे इंसान थे, ईश्वर के पुत्र नहीं। अगर सचमुच ऐसा होता, तो इतने सारे लोग क्यों यह साबित करने की कोशिश कर रहे हैं कि ईश्वर अस्तित्व में नहीं, कि यीशु उनका पुत्र नहीं, या बाइबल आज प्रासंगिक नहीं? भीतर ही भीतर हम सब जानते हैं—न्याय का दिन हम सब के लिए आ रहा है।
तो क्या परमेश्वर के क्रोध से बचने और स्वर्ग जाने का कोई रास्ता है? हां, है। इसे कहा जाता है—सुसमाचार, यानि परमेश्वर की मुक्ति योजना। आइए कुछ बाइबिल श्लोक देखें जो इस संदेश की पांच मुख्य बातों—ईश्वर, यीशु, मनुष्य, विश्वास और स्वर्ग—को संक्षेप में बताती हैं।

इस एक वचन में पाँचों बातें शामिल हैं:

- जगत = मनुष्य
- अपना एकलौता पुत्र = मसीह यीशु
- उस पर विश्वास = आस्था
- हानि नहीं होना या अनन्त जीवन = स्वर्ग या नरक

ईश्वर

ईश्वर को आप कैसे समझाएंगे? वह एक ईश्वर हैं जो स्वयं को पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा के रूप में प्रकट करते हैं। वह सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, और सर्वव्यापी हैं। सबसे बुद्धिमान मस्तिष्क भी उनके रहस्यों में उलझ जाता है, फिर भी उनका प्रेम और उद्धार योजना इतनी सरल है कि एक बच्चा भी समझ सके। इसे पूरी तरह समझने में अनंत काल लगेगा।

ईश्वर ने कहा कि उनका एक नाम "ईर्ष्यालु" है (निर्गमन **34:14**)। उन्होंने इजरायल को बताया, "मैं एक ईर्ष्यालु ईश्वर हूँ" (निर्गमन **20:5**; **34:14**; व्यवस्थाविवरण **4:24**; **5:9**; **6:15**; योशू **24:19**; नहूम **1:2**)। ईश्वर की ईर्ष्या मनुष्य जैसी स्वार्थी या विनाशकारी नहीं होती, बल्कि यह पवित्र और प्रेम से प्रेरित होती है। वह अपने लोगों की मूर्तिपूजा या अविश्वास सहन नहीं करेंगे। उनकी ईर्ष्या दिखाती है कि वह हमारे और अपने बीच कुछ भी नहीं चाहते।

पुराने नियम में इजरायल अपने लिए लकड़ी या पत्थर की मूर्तियों के पीछे भागता रहा, जो न देख सकती थीं न बोल सकती थीं; इसे ईश्वर ने व्यभिचार कहा। इसी तरह जब हम अपनी मेहनत से अनंत जीवन का पुरस्कार कमाने की कोशिश करते हैं, तब हम आध्यात्मिक व्यभिचार करते हैं। लेकिन जब हम अनुग्रह के उपहार को स्वीकार कर विश्राम करते हैं, तब हम वफादार रहते हैं।

अपने पसंदीदा खेल या प्रतियोगिता का उदाहरण लें—विजेता हारने वालों के साथ ट्रॉफी नहीं बाँटता। ठीक उसी तरह ईश्वर हमें शैतान, पाप, या इस दुनिया से साझा नहीं करेंगे क्योंकि यीशु ने उन सब पर विजय पाई। यदि हम किसी और को या किसी दूसरी चीज़ को अपनी प्राथमिकता बना लें, तो वह विनाशकारी हो सकता है। जैसे हम अपने बच्चों के लिए सर्वश्रेष्ठ चाहते हैं, वैसे ही ईश्वर हमारे लिए सर्वश्रेष्ठ चाहते हैं। हमें उन पर भरोसा करना चाहिए।

"परन्तु ईश्वर ने अपने प्रेम को इस प्रकार प्रदर्शित किया कि जब हम अभी भी पापी थे, तब मसीह हमारे लिए मर गए" (रोमियों **5:8**)। ईश्वर ने हमसे पहले प्रेम दिखाया—पहले कि हम जन्में, पहली शब्द बोलें या पहला कदम उठाएँ। वह हमें हमारे गुणों के लिए नहीं, बल्कि हमारी असलियत के लिए प्रेम करते हैं। सच्चा प्रेम प्रदर्शन पर आधारित नहीं होता। सिर्फ विश्वास से हम उनके प्रेम, क्षमा, और अनुग्रह का अनुभव कर सकते हैं।

पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा ने हमें—अपने ही शत्रुओं को—ईश्वर के क्रोध से बचाने की योजना बनाई क्योंकि ईश्वर प्रेम है। आग के तालाब को शैतान, दानवों, विरोधी मसीह, अधोलोक, और मृत्यु के लिए बनाया गया है, न कि मनुष्यों के लिए। एक पिता की भांति, जब उसके बच्चे अवज्ञा करते हैं तो वह दुखी होता है पर सजा देना उसकी इच्छा नहीं। निर्णय हमारे हाथ में है: क्या हम आज्ञाकारिता करके प्रेमपूर्ण पिता से मिलेंगे, या बार-बार अवज्ञा करके उन्हें न्यायाधीश के रूप में पाएंगे? ईश्वर हमें अपने क्रोध के दिन से बचाना चाहता है।

चाहे आप विश्वास करें या न करें, ईश्वर के क्रोध का दिन आना निश्चित है—यह युहन्ना बपतिस्ता, यीशु, पौलुस और युहन्ना सभी ने चेतावनी दी है। पर अपने पुत्र यीशु के माध्यम से, ईश्वर ने हमें बचने का मार्ग दिया है क्योंकि वह हमसे प्रेम करते हैं। वह चाहते हैं कि हम उनके बच्चे बनें और उन्हें एक पिता के रूप में जानें, न कि एक न्यायाधीश के रूप में।

कुछ के लिए "पिता" शब्द बुरे अनुभवों या परित्याग की यादें ला सकता है। लेकिन जान लें कि ईश्वर पिता प्रेमस्वरूप हैं। वह आपकी तस्वीर बदलना चाहते हैं ताकि आप सच्चे पिता को जान सकें और उनके प्रेम को महसूस कर सकें, क्योंकि ईश्वर आपकी खातिर ईर्ष्यालु हैं।

"ईश्वर के बारे में आपके क्या प्रश्न हैं?"
इंसान

अगर मैं आपसे पूछूं, “क्या आपको लगता है कि आप मरने के बाद स्वर्ग जाएंगे?” तो आपका जवाब क्या होगा?

शायद आप कहेंगे, “मैं एक अच्छा व्यक्ति हूं, मैंने कभी किसी को चोट नहीं पहुंचाई, और मैंने कभी किसी को नहीं मारा।” या फिर, “मैं दूसरों जितना बुरा नहीं हूं; मैं अच्छे काम करता हूं और दान देता हूं।”

लेकिन अगर मैं आपको बताऊं कि बाइबिल के अनुसार इनमें से कोई भी जवाब सही नहीं है?

भगवान का पुत्र या पुत्री बन कर उसके स्वर्ग में प्रवेश करने से पहले हमें यह स्वीकार करना होगा कि हम पापी हैं और हमने उसकी पवित्र व्यवस्था का उल्लंघन किया है। हमें यह समझना होगा कि अपनी ओर से हम खुद को बचा नहीं सकते। व्यवस्था न्याय मांगती है, दया या कृपा नहीं। चूंकि हम सभी ने ईश्वर के प्रति बगावत की है, इसलिए न्याय ने हमें मृत्यु-दंड दिया है। कोई अपील, कोई रहस्य रास्ता या कोई अंतिम क्षण का कॉल हमें इस मौत के दंड से बचा नहीं सकता।

यह सत्य स्वीकार करने में जितनी कठिनाई हो सकती है, उससे कहीं अधिक है—कि हम ईश्वर के प्रति बागी हैं और हमारे ऊपर मृत्यु-दंड है। हम सभी पाप में जन्मे हैं और बागी होकर अपनी खुशी की तलाश करना सामान्य समझते हैं। लेकिन यह देखना जरूरी है कि हम पापी, घमंडी और स्वार्थी हैं, और अपने बलबूते पर हम खुद को नहीं बचा सकते।

एक दिन हम सभी ईश्वर के सामने खड़े होंगे और अपने जीवन का हिसाब देंगे। उस दिन वह हमारे लिए या तो पिता होगा या न्यायाधीश—यह इस बात पर निर्भर करेगा कि क्या हम खुद को उद्धारकर्ता की जरूरत वाले पापी मानते हैं या अपने अच्छे कामों पर भरोसा करते हैं। जब हम उसके सामने खड़े होंगे, तो हम अकेले होंगे; हम किसी से तुलना नहीं कर सकते।

खुद को पापी के रूप में देखना बेहद जरूरी है। हमें अपने साथ ईमानदार होना होगा और कठिन सवालों का सामना करना होगा। ईश्वर सिर्फ हमारे जीवन-शैली की परवाह नहीं करता, बल्कि इस बात की भी परवाह करता है कि हम कैसे मरेंगे। मृत्यु के बाद हमारा न्याय होगा, और हमने जिस पर भरोसा किया—स्वर्ग या नर्क—वही हमारा भविष्य तय करेगा।

अब एक संक्षिप्त इतिहास: ईश्वर ने इस्राएलियों के साथ एक वाचा की (एक अनुबंध)। अगर उन्होंने उसके आदेशों का पालन किया, तो वह उन्हें आशीर्वाद देगा। वे उसके लोग बनेंगे और वह उनका ईश्वर होगा। उसने उन्हें दस आज्ञाएँ दीं, लेकिन वे असफल रहे। वे चाहे कितनी भी कोशिश कर लें, वे दसों आज्ञाएँ पूरी नहीं रख सके। और आप? क्या आप दिन-प्रतिदिन दसों आज्ञाएँ पूरी कर सकते हैं?

दस आज्ञाएँ (निर्गमन **20:3–17**)

- मेरे सामने कोई अन्य देवता न रखना। (पद **3**)
- मूर्तियाँ न बनाना। (पद **4–6**)
- अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का दुरुपयोग न करना। (पद **7**)
- विश्राम दिन को पवित्र मानना। (पद **8–11**)
- अपने माता-पिता का आदर करना। (पद **12**)
- हत्या न करना। (पद **13**)
- व्यभिचार न करना। (पद **14**)
- चोरी न करना। (पद **15**)
- अपने पड़ोसी के विरुद्ध झूठी गवाही न देना। (पद **16**)
- लालच न करना। (पद **17**)

अब मैं आपसे एक सवाल पूछता हूँ: जब आप कठिन समय से गुजरते हैं, तो क्या आप परमेश्वर की ओर मुड़ते हैं या शराब, नशा, यौन सुख, मनोरंजन, या खुद पर भरोसा करते हैं उस कठिन समय से निकलने के लिए?
अगर आपका उत्तर परमेश्वर नहीं है, बल्कि कुछ और है—तो वही आपकी मूर्ति है।
क्या आपने कभी परमेश्वर के नाम का अपमान किया है? इसका मतलब है झूठी शपथ लेना या उसे गाली के रूप में प्रयोग करना।
जो दिन आप विश्राम दिन मानते हैं, क्या आपने कभी उस दिन काम किया और विश्राम नहीं किया?
क्या आपने कभी अपने माता-पिता का अपमान किया है?
क्या आप कभी किसी से इतने नाराज़ हुए कि आपने चाहा कि वह मर जाए?
क्या आपने किसी को ऐसा व्यवहार किया जैसे वह आपके लिए मर चुका हो? क्या आपने किसी को मूर्ख कहा या तिरस्कार किया?
तो आप नरक की आग के खतरे में हैं, क्योंकि आपने अपने मन में हत्या की है।
क्या आपने कभी किसी को वासना की दृष्टि से देखा है?
क्या आपने कभी अश्लीलता का आनंद लिया है या नग्नता वाली फिल्म पसंद की है?
तो आपने अपने मन में व्यभिचार किया है।
क्या आपने कभी कुछ चुराया है?
क्या आपने कभी किसी के बारे में झूठ बोला है या खुद को बचाने के लिए झूठ कहा है?
क्या आपने कभी किसी की चीज़ों के लिए लालच किया है—जैसे उनका जीवनसाथी, घर, वाहन, धन, बच्चे, या कोई और वस्तु?
याद रखिए, हमें पापी और अधर्मी कहलाने के लिए केवल एक आज्ञा तोड़नी होती है।
और वह भी केवल एक बार!
कोई "तीन बार की छूट" नहीं है—एक बार तोड़ना ही काफी है।
जब हम जवाबदेही की उम्र तक पहुँचते हैं, तब से मृत्यु तक कोई दूसरा मौका नहीं मिलता।
अगर हम ईमानदारी से सोचें, तो हमें परमेश्वर और उसकी बाइबल से सहमत होना होगा।
रोमियों **3:23** कहता है: "सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।"
पाप का अर्थ है—लक्ष्य चूक जाना।
हममें से कोई भी परमेश्वर की व्यवस्था को पूरी तरह नहीं निभा पाया है।
इसलिए हम सभी पापी हैं।
हर एक ने लक्ष्य चूका है।
रोमियों **6:23** कहता है: "पाप की मजदूरी मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान अनन्त जीवन है।"
हम सभी मृत्यु और नरक के योग्य हैं।
रोमियों **3:10** कहता है: "कोई धर्मी नहीं है, एक भी नहीं।"
रोमियों **3:20** कहता है: "व्यवस्था के कामों से कोई भी शरीर परमेश्वर के सामने धर्मी नहीं ठहर सकता।"
इसका मतलब है कि हमारे अच्छे काम, धन, या रूप हमें परमेश्वर के स्वर्ग में नहीं ले जा सकते।
गलातियों **3:10** कहता है: "जो व्यवस्था के कामों पर निर्भर हैं, वे शाप के अधीन हैं; क्योंकि लिखा है, 'जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हर बात को नहीं मानता और नहीं करता, वह शापित है।'"
तो अगर आप व्यवस्था पर भरोसा कर रहे हैं, तो आप असफलता के लिए शापित हैं।
तो फिर परमेश्वर ने व्यवस्था क्यों दी, जब वह जानता था कि कोई उसे पूरी तरह नहीं निभा सकता?
व्यवस्था हमें दिखाती है कि हम कितने पापी हैं।

लेकिन हम दूसरों से अपनी तुलना करके या अविश्वास के कारण सोचते हैं कि हम इतने बुरे नहीं हैं।
हम सोचते हैं कि व्यवस्था गलत है, और हम अपवाद हैं।
लेकिन जब तक हम परमेश्वर की बातों पर विश्वास नहीं करते, हम उद्धार नहीं पा सकते।
व्यवस्था इसलिए दी गई ताकि सभी लोग जान सकें कि वे पापी हैं।
यह ठीक वैसा है जैसे एक माता-पिता अपने छोटे बच्चे को जूते बाँधते या कोट की ज़िप लगाते हुए देखते हैं।
बच्चा बहुत छोटा होता है और यह काम नहीं कर सकता।
जब माता-पिता मदद करने के लिए आगे बढ़ते हैं, तो बच्चा पीछे हटता है और ज़िद करता है, **"**मैं खुद कर सकता हूँ।**"**
माता-पिता दुखी होकर देखते हैं कि बच्चा बार-बार असफल होता है**—**जब तक वह खुद समझ न जाए कि उसे मदद की ज़रूरत है।
परमेश्वर चाहता था कि लोग अनुभव से सीखें कि वे व्यवस्था को नहीं निभा सकते।
व्यवस्था उनके मन को पाप से शुद्ध नहीं कर सकती थी।
वह चाहता है कि हम भी यही जानें।
चाहे किसी के पास कितनी भी इच्छाशक्ति हो, वह व्यवस्था को पूरी तरह नहीं निभा सकता।
हम सभी असफल होने के लिए बने हैं।
हाँ, चर्च जाना या दान देना कुछ समय के लिए अच्छा महसूस करा सकता है, लेकिन यह हमारे मन को शुद्ध नहीं करता।
अब जब हम समझ गए हैं कि हम खुद को नहीं बचा सकते और हम अभी भी परमेश्वर के क्रोध के अधीन हैं **(**रोमियों **3:20),** तो हम क्या करें कि परमेश्वर के क्रोध से बच सकें**?**
आपके मन में मनुष्य या पाप के बारे में क्या प्रश्न हैं**?**

तो आप क्या करते हैं जब आपको यह एहसास होता है कि आपके अच्छे काम और प्रयास आपको स्वर्ग में नहीं ले जा सकते, और आप अभी भी परमेश्वर के क्रोध के अधीन हैं?
क्या आप इससे बचने की कोशिश करते हैं और आशा करते हैं कि यह अपने आप चला जाएगा?
या आप सच्चाई का सामना करते हैं, परमेश्वर से सहमत होते हैं, और पश्चाताप करते हैं?
पश्चाताप का अर्थ है अपने पापों से मुड़कर परमेश्वर की ओर लौटना।
रोमियों **10:4, 9–11, 13** कहता है:
"क्योंकि मसीह व्यवस्था का अंत है, हर उस व्यक्ति के लिए जो विश्वास करता है। (यीशु ने हमारे स्थान पर पूरी व्यवस्था को सिद्ध रूप से पूरा किया है, उन लोगों के लिए जिन्होंने उस पर विश्वास रखा है)।
यदि तुम अपने मुँह से यीशु को प्रभु मानो, और अपने दिल से विश्वास करो कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जिलाया—तो तुम उद्धार पाओगे।
क्योंकि मन से विश्वास करने से धर्म की प्राप्ति होती है, और मुँह से अंगीकार करने से उद्धार होता है।
शास्त्र कहता है, 'जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह लज्जित न होगा,' और 'जो कोई प्रभु का नाम पुकारेगा, वह उद्धार पाएगा।'"
जब हम अपने दिल से विश्वास करते हैं और अपने मुँह से अंगीकार करते हैं कि यीशु ही प्रभु है, और उसकी क्षमा को स्वीकार करते हैं—तो हम बचाए जाते हैं।
परमेश्वर पिता अपना क्रोध हमसे हटा देता है, हमें अपना अनुग्रह देता है, और हम उसके बच्चे बन जाते हैं—पवित्र आत्मा द्वारा मोहरबंद, जिसे गोद लेने की आत्मा कहा जाता है।
पवित्र आत्मा हमारी पहचान की मुहर है, यह गवाही देता है कि हम परमेश्वर के बच्चे हैं।
नए नियम का सबसे बड़ा रहस्योद्घाटन यही है: हम परमेश्वर के बच्चे हैं।
यूहन्ना **1:12–13** कहता है:
"परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उन्हें परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार दिया गया—उनको जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं, जो न तो रक्त से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।"
यह परमेश्वर की इच्छा है कि आप पश्चाताप करें और उसके बच्चे बन जाएँ।
इफिसियों **2:8–9** कहता है:
"क्योंकि अनुग्रह से तुम विश्वास के द्वारा उद्धार पाए हो, और यह तुम्हारी ओर से नहीं—यह परमेश्वर का वरदान है। यह कर्मों के कारण नहीं, ताकि कोई घमंड न करे।"
यूहन्ना **6:29** कहता है:
"यीशु ने उत्तर दिया, 'यह परमेश्वर का कार्य है कि तुम उस पर विश्वास करो जिसे उसने भेजा है।'"
इब्रानियों **11:1** कहता है:
"अब विश्वास उन बातों का निश्चय है जिनकी आशा की जाती है, और उन बातों का प्रमाण है जो देखी नहीं जातीं।"
इब्रानियों **11:6** कहता है:
"और विश्वास के बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना असंभव है, क्योंकि जो कोई परमेश्वर के पास आता है, उसे विश्वास करना चाहिए कि वह है और वह उन लोगों को प्रतिफल देता है जो उसे खोजते हैं।"
रोमियों **1:16** कहता है:
"यह सुसमाचार परमेश्वर की शक्ति है, हर उस व्यक्ति के लिए जो विश्वास करता है।"
रोमियों **1:17** कहता है:
"धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा।"
मनुष्य कहता है, "पहले मुझे दिखाओ, फिर मैं विश्वास करूँगा।"

लेकिन यह विश्वास नहीं है।
जब आप परमेश्वर के सामने खड़े होंगे और वह कहेगा, "तू पापी है," तब आप चाहेंगे कि आपने सहमति दी होती।
आप चाहेंगे कि आपने पश्चाताप किया होता और उद्धार पाया होता।
तो विश्वास क्या है?
सीधे शब्दों में कहें तो यह है—अपनी सारी आशा यीशु पर रखना।
ना किसी "बल" पर, ना यिन-यांग पर, ना किसी रहस्यमय शक्ति या कर्म पर, और ना ही अपने अच्छे कामों पर।
यह एक व्यक्ति पर भरोसा रखना है—एक ऐसा व्यक्ति जिसे आप जान सकते हैं और जिसके साथ संबंध बना सकते हैं।
वह व्यक्ति है यीशु!
जैसे ही आप अगला भाग पढ़ेंगे, आप जानेंगे कि यीशु ने पूरी दुनिया और विशेष रूप से आपके लिए क्या किया।
क्यों, आप पूछ सकते हैं?
क्योंकि यीशु अपने पिता से प्रेम करता है—और हमसे भी।
परमेश्वर पिता और यीशु ने हमें परमेश्वर के क्रोध से बचने का मार्ग दिया है—यीशु पर विश्वास रखकर।
क्या आप अपने जीवन में परमेश्वर की शक्ति देखना चाहते हैं?
क्या आप उसकी उपस्थिति और आनंद महसूस करना चाहते हैं?
तो यीशु पर विश्वास रखें।
उसके बलिदान पर भरोसा करें, अपने अच्छे कामों पर नहीं।
यही विश्वास है—यीशु के क्रूस पर पूर्ण कार्य पर भरोसा करना, अपने कामों पर नहीं।
यीशु ने हमारे लिए पूरी व्यवस्था को पूरी तरह निभाया—दस आज्ञाएँ, धार्मिक नियम, नागरिक नियम—सब कुछ, सौ प्रतिशत सिद्ध रूप से।
अब, मैं जानता हूँ कि कुछ लोग कह सकते हैं, "मेरे पास विश्वास नहीं है।"
सच्चाई यह है कि हम सभी के पास विश्वास की एक मात्रा होती है।
उदाहरण के लिए, पृथ्वी पर मानव जाति के अस्तित्व के बारे में दो प्रमुख सिद्धांत हैं: सृष्टि का सिद्धांत और विकास का सिद्धांत।
किसी सिद्धांत को तथ्य बनने के लिए विज्ञान को उसे दोहराना पड़ता है।
इसलिए, विज्ञान को सृष्टि या विकास सिद्धांत को सिद्ध करने के लिए ब्रह्मांड में ऐसा स्थान खोजना होगा जहाँ कुछ भी मौजूद न हो।
चूँकि विज्ञान ऐसा स्थान नहीं खोज सकता, वे कभी भी किसी सिद्धांत को सिद्ध नहीं कर पाएँगे।
इसलिए, सृष्टि या विकास में विश्वास करना—यह विश्वास से ही संभव है।
चूँकि परमेश्वर का राज्य विश्वास पर आधारित है, वह कभी भी इन सिद्धांतों को तथ्य के रूप में सिद्ध नहीं होने देगा।
इसलिए परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको विश्वास दे—उस पर विश्वास करने के लिए और यह विश्वास करने के लिए कि वह आपसे प्रेम करता है।
जानिए कि यीशु में आपका विश्वास परमेश्वर पिता के हृदय को छूता है,
क्योंकि हमारी धार्मिकता व्यवस्था को मानने पर आधारित नहीं है—यह विश्वास पर आधारित है।
इसलिए हम परमेश्वर के साथ सही संबंध में विश्वास के द्वारा आते हैं, व्यवस्था के पालन से नहीं।
आप कह सकते हैं, "मैं यीशु पर विश्वास क्यों करूँ? उसने मेरे लिए वास्तव में क्या किया?"

आपके मन में विश्वास के बारे में क्या प्रश्न हैं?

यीशु मसीह

पुराने नियम में, ईश्वर ने इस्राएल राष्ट्र के साथ एक वाचा (अनुबंध) की: यदि वे उसकी आज्ञाओं का पालन करेंगे, तो वे आशीर्वाद पाएंगे। हालांकि, हमारी तरह, वे भी कानून या दस आज्ञाएँ पूरी नहीं रख सके। इसलिए, पिता ईश्वर ने अपने पुत्र यीशु के साथ एक नई वाचा—नई करारनामा—स्थापित की। यीशु ने इस नई वाचा को बारीकी से, एकदम पूर्ण रूप से निभाया। जैसा कि मत्ती **5:17–18** में लिखा है:

“मुझे यह समझना नहीं चाहिए कि मैं आया हूँ—पूरी और पैग़म्बरों को नद्द करने के लिए; न मैं आया हूँ नद्द करने के लिए, परन्तु पूरा करने के लिए। सच्ची बात कहता हूँ: जब तक आकाश और पृथ्वी नष्ट न हो जाएँ, कानून का एक **jota** (छोटा अक्षर) भी नष्ट नहीं होगा, जब तक सब पूरा न हो जाए।”
जब यीशु क्रूस पर टंगे हुए बोले, “मामला खत्म हुआ!” (यूहन्ना **19:30**), तो उन्होंने बताया कि उन्होंने पिता के साथ अपनी नई वाचा पूरी कर दी—हमारी ओर से कानून को पूरा करके। पिता ईश्वर उन लोगों को इस नई वाचा का लाभ उठाने की अनुमति देते हैं, जो यीशु में विश्वास करते हैं। आप पूछ सकते हैं, क्यों?
क्योंकि हम ईश्वर के प्रेम के केन्द्र हैं, उन्होंने यीशु मसीह को धरती पर भेजा—एक कुंवारी से जन्मे—सिर्फ हमें पिता से मिलवाने के लिए नहीं, बल्कि खोए हुए लोगों को खोजकर बचाने के लिए। जैसा कि लूका **5:32** में कहा गया है: “मैं दुष्टों को तौहिद के लिए नहीं, पर पापियों को पश्चाताप के लिए बुलाने आया हूँ।”
मत्ती **1:21** कहता है: “और स्त्री एक पुत्र को जन्म देगी; उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वही अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा।”
जब मानव गिर गया, तो ईश्वर ने गुलाम नहीं खोए—बल्कि पुत्र-पुत्रियाँ खोए। आप उन्ही खोए हुए बच्चों में से एक हैं।
1 कुरिन्थियों **15:3–7** में लिखा है कि “मसीह हमारे पापों के लिए शास्त्रानुसार मरा, उसे दफनाया गया, और शास्त्रानुसार तीसरे दिन पुनर्जीवित हुआ। फिर उसने केफास को, बारह चेलों को, पाँच सौ से अधिक विश्वासियों को एक साथ, याकूब को, सभी प्रेरितों को, और अंततः पौलुस को दर्शन दिया।”
यीशु के बलिदान के द्वारा ही हम ईश्वर की क्षमा का अनुभव कर सकते हैं। इब्रानियों **4:15** कहता है: “हमारे पास ऐसा महायाजक नहीं है, जो हमारी कमजोरियों से अनभिज्ञ हो, पर वह उसी प्रकार परखा गया जिसके समान हम हैं—बिना पाप के।”
यीशु जानता है कि प्रलोभन कैसा होता है, और वह हमें दोष नहीं देता बल्कि हमारी दुर्बलताओं पर सहानुभूति रखता है। इसलिए इब्रानियों **9:11–15**, **22**, **26–28**; **10:10**, **12–19**, **22** बताता है कि यीशु ने अपने ही रक्त से एक बार शाश्वत मुक्ति प्राप्त की, न कि बकरियों या बछड़ों के खून से; और अब बिना रक्त बहाए कोई क्षमा नहीं। वह खुद को पाप के लिए बलिदान करके लाया गया, और अब उसकी एक बार की बलि ने उन सभी को परिपूर्ण किया जो पवित्र किए जाते हैं। पवित्र आत्मा भी इस बात की गवाही देता है, कि “मैं अपनी वाचा उनके हृदयों पर लिखूंगा, उनके मन में।” जहाँ पापों की क्षमा है, वहाँ फिर किसी बलिदान की आवश्यकता नहीं।
जो लोग सोचते हैं कि ईश्वर उन्हें क्षमा नहीं करना चाहता या उनका पाप बहुत बड़ा है—उनके लिए यीशु ने पक्षाघातग्रस्त की कहानी से दिखाया कि वह क्षमा देने को तैयार हैं। मत्ती **9:2–7** में लिखा है कि जब पापियों ने उसे एक पंगु को लिटाया, तो उसने कहा, “बेटे, निर्भय हो—तेरे पाप माफ़ हुए हैं।” कुछ विद्वानों ने कहा, “यह धर्मद्रोह है।” लेकिन यीशु ने उनके विचार जाने और कहा, “क्या कहने में आसान है—‘तेरे पाप माफ हुए’, या ‘उठ और चल’?” फिर उसने कहा, “उठ, अपना बिस्तर उठाकर घर जा।” और वह आदमी चंगा होकर चला गया।
पक्षाघातग्रस्त की तरह, यीशु की क्षमा हमें चंगा कर एक स्वस्थ रिश्ता देती है—विश्वास और प्रेम पर आधारित, न कि हमारे प्रदर्शन पर।
जब हम ईश्वर की क्षमा का अनुभव करते हैं, हम उसके कार्य की पूर्णता में विश्राम पाते हैं और नहीं डरते कि हमने उसकी कृपा से अधिक पाप किया होगा। हम जान सकते हैं:
“क्योंकि उसने हमें अंधकार के राज्य से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र की स्वतंत्रता का साम्राज्य दिया, जिसमें हमें पापों की क्षमा मिली।” (कलुस्सियों **1:13–14**)

“और जब तुम अपने अनाचारों में मृत थे, तब उसने तुम्हें जीवन दिया, और सब पाप माफ किए।” **(**कलुस्सियों **2:13)**
“उसके रक्त में हमें मुक्ति**—**पापों की क्षमा मिली, उसके अनुग्रह के अनुसार।” **(**इफिसियों **1:7)**
यह सब ईश्वर के अनुग्रह से हुआ, न कि हमारे कामों से।
यही कारण है कि हम उसकी कृपा से माफ़ हुए और मसीह में जीवित हैं।

जब यीशु ने क्रूस पर अपना कार्य पूरा किया, पिता ने उनका बलिदान**—**एक संपूर्ण और परिपूर्ण दान**—**स्वीकार कर लिया।
उसके बाद यीशु अपने पिता के बगल में बैठ गए, जो अब हमारे पिता भी हैं। हम यह इसलिए जानते हैं क्योंकि जब यीशु मृतकों में से जीवित हुए और मरियम ने उन्हें छू लिया, तो उन्होंने कहा,
“हे मरियम, मुझसे मत चिपको; परन्तु जाकर मेरे भाइयों से कहो, कि मैं अपने परमेश्वर के पास जा रहा हूँ, जो तुम्हारा परमेश्वर है; और मैं अपने पिता के पास जाता हूँ, जो तुम्हारा पिता भी है।” **(**यूहन्ना **20:17)**
हमें परम पिता के साथ व्यक्तिगत संबंध का अधिकार मिला है। यह उनकी योजना थी कि आप और मैं उनके पुत्र-पुत्री बनकर उनके क्रोध से बचें। जैसा लिखा है**:**
“परिपूर्ण समय में परमेश्वर ने अपनी संतान भेजी, जो स्त्री से उत्पन्न हुई, विधान के अधीन हुई, ताकि विधान के अधीन लोगों को मुक्ति मिले और हमें पुत्रों के रूप में दत्तक ग्रहण का अधिकार मिले। और क्योंकि आप पुत्र हैं, परमेश्वर ने अपने पुत्र की आत्मा हमारे हृदयों में भेजी, जो पुकारती है, ‘अब्बा**!** पिता**!**’” **(**गलातियों **4:4–6)**
जब परमेश्वर हमें देखता है, वह हमें अपने प्रिय बच्चों के रूप में देखता है**—**स्वीकार्य, महिमा-वश। जैसे पौलुस ने कहा**:**
“मैं मसीह के साथ क्रूसित हो चुका हूँ; अब मैं जीवित नहीं, पर मसीह मुझमें जीवित है। और जो जीवन अब मैं शरीर में जीता हूँ, वह परमेश्वर के पुत्र की आस्था से जीता हूँ, जिसने मुझे प्रेम किया और अपने लिए बलिदान किया।” **(**गलातियों **2:20)**
यीशु का क्रूस पर पूरा कार्य हमें अब परमेश्वर के प्रेम के लिए पहल करने की जरूरत नहीं छोड़ता**—**बल्कि हम उनके प्रेम में विश्राम कर सकते हैं।
यीशु के द्वारा, हम परम पिता के सामने स्वीकृत हैं।
यीशु के द्वारा, हमें न्यायोचित ठहराया गया**—**हम कभी भी अपने पापों का मूल्य खुद नहीं चुकाएंगे।
पौलुस ने रोमियों में लिखा है**:**
“कौन परमेश्वर के चुने हुए लोगों पर आरोप लगाएगा**?** वही तो है जो उन्हें न्यायोचित ठहराता है; और कौन दोषी ठहराएगा**?**” उत्तर है**:** कोई नहीं। **(**रोमियों **8:33–34)**
यीशु के द्वारा, हम आज भी पवित्र हैं; पाप की शक्ति हमारे जीवन में टूट गई है।
यीशु ने हमें शैतान और अंधकार के राज्य से छुड़ाया, हमें पाप से मुक्त किया और इस जगत की बंदीगृह से आजाद किया।
यीशु ने हमें परम पिता के क्रोध से भी बचाया। जैसा रोमियों **5:9–11** में लिखा है**:**
“इतना ही नहीं, अब हम उसके रक्त द्वारा न्यायोचित ठहराए जाने के बाद परमेश्वर के क्रोध से उद्धार भी प्राप्त करेंगे। जब हम शत्रु थे, तब भी उसके पुत्र की मृत्यु से परमेश्वर के साथ मेल हुआ; तो और भी अधिक, मेल खाने के बाद, हम उसकी जीवन शक्ति से उद्धार पाएँगे। और यही नहीं, हम परमेश्वर में अपने प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से आनन्द करते हैं, जिसके द्वारा हमें सामंजस्य मिला।”

यीशु के रक्त से हमें निर्मल विवेक मिला है, ताकि हम परमेश्वर की सेवा कर सकें और उसके साथ संबंध में चलें। हमारे पास परमेश्वर के साथ शांति है—हमें भरोसा है कि वह हमारे पक्ष में है, हमारे विरुद्ध नहीं। यीशु हमारे दुखों और दुर्बलताओं से सहानुभूति रखते हैं और वे हमारे मध्यस्थ, राजा, प्रभु, सह-यारिकी और मित्र हैं। यह सब क्योंकि जब यीशु क्रूस पर लटके, तब वे पाप बन गए। उन्होंने पहली बार अपने पिता को "ईश्वर" कहा, और जब उत्तर नहीं मिला, उन्होंने कहा, "पूर्ण हो गया," सिर झुकाया और मर गए। वे अपने पिता द्वारा त्यागे गए, और एक टूटे हुए हृदय से मरे।

"परमेश्वर ने उस (यीशु) को, जो पाप नहीं जानता था, हमारे लिए पाप होने के योग्य ठहराया, ताकि हम उसी में परमेश्वर की धार्मिकता पाएँ।" **(2** कुरिन्थियों **5:21)**

यीशु हमारी धार्मिकता हैं।

यीशु हमारे उद्धारकर्ता हैं।

यीशु हमारी पवित्रता हैं।

यीशु परम पिता तक पहुंचने का एकमात्र मार्ग हैं।

यीशु सत्य हैं—सत्य कोई अमूर्त विचार नहीं, बल्कि एक व्यक्ति है, और उसका नाम यीशु है।

यीशु जीवन हैं—उन्होंने हमारे मृत्यु को सहा ताकि हम उनका जीवन पा सकें।

और यदि यीशु ने हमारे लिए इतना कुछ किया, तो उन्होंने हमें पवित्र आत्मा का वरदान भी दिया—हमारे पापों की चर्चा जगाने वाला, सांत्वनादायक, मध्यस्थ, मार्गदर्शक और श्रीमान यीशु के कार्यों एवं हमारी पहचान की सच्चाई सिखाने वाला।

यीशु ने हमें उनकी पुस्तक—बाइबिल—और उनके समुदाय—चर्च—भी दिया, ताकि हम उन्हें और करीब से जान सकें, उत्साहित हो सकें, और अपने भाइयों-बहनों को भी उत्साहित कर सकें, ताकि हमारी आस्था बढ़े। इसलिए ऐसी बाइबिल चुनें जिसे आप पढ़ना पसंद करें और परमेश्वर से संबंध बनाते हुए उसे अध्ययन करें। जैसा प्रेरित यूहन्ना ने लिखा, "आदि में वचन था, वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।" **(**यूहन्ना **1:1)**

एक दिन हम महिमा प्राप्ति—ग्लोरिफिकेशन—से गुज़रेंगे, जब हम यीशु को देखेंगे और पाप का अवशेष समाप्त हो जाएगा। हल्लेलूया**!**

अंत में, यीशु हमारे लिए मर गए ताकि हम जान सकें कि हम परमेश्वर के प्रेम का केंद्र हैं**!** एक पल के लिए सोचिए, जोर से कहिए, "मैं परमेश्वर के प्रेम का केंद्र हूँ।" आपको कैसा महसूस होता है**?** क्या यह जानकर आपके मन में आनंद, शांति और स्वीकृति नहीं उठती कि आप प्रेमित हैं और कि परमेश्वर आपकी परवाह करते हैं**?**

कृपया जान लीजिए कि यीशु इससे भी कहीं अधिक हैं। हमें अनन्त समय चाहिए होगा उनकी महानता को समझने के लिए। पर उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान के कारण ही हम अपना आत्म-मूल्य और पहचान उनके रक्त में पाते हैं, न कि अपने अच्छे कर्मों में।

यीशु के बारे में आपके क्या प्रश्न हैं**?**

अनंतता: स्वर्ग

आप जब कोई आपसे उपहार देता है तो क्या करते हैं? आप उसे स्वीकार करते हैं, है ना? आप इसका मूल्य चुकाने या इसके हकदार बनने की कोशिश नहीं करते; बस स्वीकार कर लेते हैं।
कल्पना कीजिए कि आपके बच्चे बड़े हो गए हैं और घर छोड़ चुके हैं।
अगर वे वापस आएं और कहें कि उन्हें आपके द्वारा पलाए जाने की कद्र है और वे आपको चुकाना चाहते हैं, फिर आपसे कहते हैं कि आपने गोद लेने या जन्म का खर्च, खाना, गर्मी, कपड़े, डॉक्टर के पास जाने का खर्च, डेंटिस्ट के अपॉइंटमेंट, यात्राएं, खेल, पियानो और नृत्य की कक्षाएं, और सालों भर की बाकी सभी खर्चों को जोड़ दें ताकि वे आपके नाम एक चेक लिख सकें—क्या आप खुश होंगे?
नहीं, बिलकुल नहीं। आपको गहरा आघात होगा। हमने उन्हें इसलिए गोद लिया या जन्म दिया क्योंकि हम उन्हें प्यार करते हैं। माता-पिता का सबसे बड़ा खजाना उनके बच्चे होते हैं, उनके प्यार का फल और उनकी स्नेह की वस्तु।

हम परमेश्वर पिता के अनमोल बच्चे हैं, जिन पर उसका प्रेम और स्नेह टिका है। हम उसकी उस प्रेम-कृत्य का उपहार हैं जो उसने यीशु के प्रति किया।

तो जब हम यीशु के बलिदान पर नहीं, बल्कि अपने अच्छे कर्मों पर भरोसा करके उसके प्रेम और उपहार का मोल चुकाने का प्रयास करते हैं, तो परमेश्वर पिता और यीशु को कितना और आघात होता होगा? परमेश्वर पिता हमें हमारे पापों के लिए यीशु के बलिदान के माध्यम से स्वर्ग का उपहार दे रहे हैं, और इस उपहार को अनुग्रह कहते हैं।

अनुग्रह परमेश्वर की वह अर्हता-रहित कृपा है जो हमें प्राप्त होती है, एक पवित्रता की अवस्था जिसे हमें उसकी दिव्य सहायता से आनंद के साथ मिलता है।

“मेरे पिता के घर में कई निवास स्थान हैं; यदि ऐसा न होता तो मैंने तुम्हें कहा होता। क्योंकि मैं तुम्हारे लिए स्थान बनाने जा रहा हूँ। और यदि मैं जाऊँ और तुम्हारे लिए स्थान बना लूँ, तो मैं फिर आकर तुम्हें अपने पास ले जाऊँगा, ताकि जहाँ मैं हूँ, तुम भी वहाँ रहो।”

(योहन **14:2-3)**

केवल जिनके नाम मेमने की जीवन-पुस्तक में लिखे गए हैं, वे स्वर्ग में प्रवेश करेंगे।

(लूका **10:20**; प्रकाशितवाक्य **21:27)**

स्वर्ग हमारा घर है; वह स्थान है जहाँ हम शामिल हैं। हम परमेश्वर पिता की संपत्ति हैं, और वह चाहता है कि एक दिन, अपने समय पर, हम सभी उसके साथ हों। हम उसे आमने-सामने देखेंगे, वह हम पर मुस्कुराएगा और घर में स्वागत करेगा, यह बताकर कि हम उसी के हैं।

यीशु हमारे लिए स्थान क्यों तैयार कर रहा है? वह दिखा रहा है कि उसने हमें चुना है और चाहता है कि हम उसके साथ रहें। यह जानकर कितना अद्भुत लगता है कि हमें न केवल किसी ने, बल्कि हमारे सर्वशक्तिमान, ब्रह्मांड के रचयिता परमेश्वर ने चुना, हमें प्रेम किया और हमें अपना माना।

“पर तुम चुनी हुई पीढ़ी हो, राजसी पुरोहितों की जाति, पवित्र राष्ट्र, ऐसी जनता जिसकी अपनी विशेष मिल्की है, ताकि तुम प्रकट कर सको उसके गुण जिन्हें इन्होंने अंधकार से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया; क्योंकि पहले तुम लोग न थे, अब तुम परमेश्वर के लोग हो; पहले तुम पर दया न हुई, अब दया मिली है।”

(1 पतरस **2:9-10)**

हम यहाँ बस तीर्थयात्री हैं; यह संसार हमारा स्थायी घर नहीं है। सुसमाचार केवल हमारे उद्धार का संदेश नहीं है; यह हमारी अनंतता का संदेश है, जहाँ हम न केवल परमेश्वर के संतों के साथ, बल्कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के साथ स्वर्ग में रहेंगे। हम एक दूसरे की संगति का आनंद लेंगे, और पहली बार हम प्रेम, आनंद और शांति का अनुभव करेंगे जैसा हमने पहले कभी नहीं किया। हमें पाप और हमारी आत्माओं के शत्रु से छुटकारा मिलेगा। हम सर्वश्रेष्ठ रूप में उपासना अनुभव करेंगे, और सबसे बड़ी बात, हमें अपने घर में स्वागत मिलेगा, वह जगह जहाँ हम वास्तव में शामिल हैं।

आप सोच रहे होंगे क्यों? क्योंकि परमेश्वर न केवल इस पृथ्वी पर हमारे जीवन की परवाह करता है, बल्कि वह चाहता है कि हम उसके साथ स्वर्ग में रहें भी। हम अनंत काल कहाँ बिताएंगे? स्वर्ग में या नरक में—हमें चुनना होगा।

मसीही लोग मसीह को स्वीकारकर स्वर्ग चुनते हैं, क्योंकि वे अनंत काल स्वर्ग में बिताना चाहते हैं। जो लोग मसीह को अस्वीकार करते हैं, वे नरक चुनते हैं। कोई नरक क्यों चुनेगा? क्योंकि हमारी आत्माओं का शत्रु (शैतान) उनकी समझ को इस सत्य से अंधा कर देता है कि वे प्रेमित हैं और परमेश्वर उन्हें चाहता है। शैतान झूठ का पिता कहलाता है, और वह जानता है कि हम किसी भी झूठ को मान लेंगे जो वह हमें बताएगा।

आगे बढ़ने से पहले, यदि आपने यह पढ़ा है और आप जानते हैं कि आप पापी हैं, उद्धार चाहते हैं और परमेश्वर के बच्चे बनना चाहते हैं, तो क्या आप विश्वास के साथ यीशु से प्रार्थना करेंगे? उसका क्षमा माँगें, अपने पापों से आपको शुद्ध करने के लिए कहें, अपनी आत्मा को चंगा करने और खुद को आपके लिए वास्तविक बनाने के लिए कहें। और जो भी आपको चाहिए—शांति, आशा, विश्वास या प्रेम—दब्बे दिल से यीशु से बात करना सर्वोत्तम है। फिर भी यदि आप नहीं जानते कि क्या कहें, तो आप इस प्रकार प्रार्थना कर सकते हैं:

प्रभु यीशु मसीह,
मैं देखता हूँ कि मैं पापी हूँ और मैंने तेरा पवित्र विधान तोड़ा।
मैं अपने पापों के लिए क्षमायाचना करता हूँ और तुझसे पश्चाताप करता हूँ।
प्रभु यीशु, अपने कीमती रक्त से मुझे पवित्र कर और मेरे लिए क्रूस पर मरने के लिए धन्यवाद।
मैं तेरा पवित्र आत्मा स्वीकारता हूँ, और जितना हो सके, अपना जीवन तुझ पर समर्पित करता हूँ। मैं विश्वास से रहना चाहता हूँ।
आमीन!

बधाई हो! पापी की यह प्रार्थना यह स्वीकार करने का आपका पहला कदम था कि आप एक पापी हैं जिन्हें उद्धार की आवश्यकता है। अगला कदम यीशु के साथ धीरे-धीरे चलना है—उसे जानना है। यीशु के चेला बनें: विनम्रता में उसके साथ चलकर, बपतिस्मा से, बाइबिल पढ़कर, प्रार्थना करके, गवाही देकर और आज्ञा का पालन करके। याद रखें, आप ये सब अपने उद्धार के लिए नहीं करते, बल्कि यीशु को जानने के लिए करते हैं। पवित्र आत्मा से प्रार्थना करें कि वह आपको एक ऐसे गिरजाघर की ओर ले जाए जहाँ आप अपने विश्वास और परमेश्वर के साथ अपने नए संबंध में बढ़ सकें।

परमेश्वर आपकी रक्षा करे!

अनंतकाल: नरक

“क्या मुझे दुष्ट के मृत्यु में आनन्द होता है, कहता प्रभु परमेश्वर, कि वह अपने मार्गों से लौटकर जीवित हो जाए?”
(यशायाह **18:23**)

तो आपने निर्णय लिया कि आप यीशु में विश्वास नहीं करेंगे और इस धार्मिक बातों को गलत मानेंगे। आप सोचते हैं कि कोई परलोक नहीं—मरने पर बस मिट्टी बन जाएंगे। या फिर पुनर्जन्म या कोई और परलोक मानते हैं। मुझे एक बार फिर मनाने दीजिए।

कल्पना कीजिए कि विश्व युद्ध में हो, और आप जानते हैं कि युद्ध कैसे ख़त्म होगा—पर यह आपके बच्चे की बलि मांगता है। क्या आप लड़ाई जारी रहने देंगे, या अपने बच्चे की बलि देंगे? यह आसान निर्णय नहीं; कीमत बहुत बड़ी है। आप फायदे-नुकसान तौलकर बच्चे की बलि देते हैं और युद्ध खत्म हो जाता है। बच्चे की चुभनातमक पीड़ा तो कम नहीं होती, पर लोग आपको आभार जताने आते हैं—अपने जीवन की कहानियाँ सुनाते हैं कि आपकी कुर्बानी ने उन्हें कैसे बदला। यह पूरी पीड़ा मिटा नहीं सकता, पर कुछ सहज करता है।

पर कुछ लोग आएंगे और कहेंगे कि आप मूर्ख थे, अपनी ताकत से युद्ध रोक सकते थे। वे आपके बलिदान का अपमान करेंगे। आप उनके प्रति कैसा महसूस करेंगे?

दुनिया भर में लोग रोज यही कर रहे हैं—वे पिता के एकमात्र पुत्र की कुर्बानी को ठुकरा रहे हैं। जो लोग यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता न मानें, उनका अगला ठिकाना परमेश्वर का क्रोध है—यानी नरक। यीशु ने नरक के बारे में स्वर्ग की तुलना में अधिक बोला। उनकी पर्णनाएँ डरावनी हैं:

"बाहर अँधेरे की जगह होगी; वहाँ विलाप और दाँत पीसने होंगे।"

(मत्ती 25:30)

"और ये पापी अनन्त दण्ड में जाएंगे।"

(मत्ती 25:46)

"युगान्त में भी ऐसा ही होगा; स्वर्गदूत आएँगे, धर्मियों में से दुष्टों को निकालकर आग के भट्ठे में फेंक देंगे; वहाँ विलाप और दाँत पीसने होंगे।"

(मत्ती 13:49–50)

"वहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता, और अग्नि नहीं बुझती।"

(मरकुस 9:46, 48)

"और शैतान, जिसने उनको धोखा दिया, जल और सल्फर की झील में फेंका गया; वहीं दुष्ट-जानवर और झूठा भविष्यवक्ता भी होंगे; उन्हें दिन-रात पीड़ा दी जाएगी।"

"फिर मैंने बड़ा श्वेत सिंहासन देखा, और उसपर बै दिखे जिनसे धरती और स्वर्ग भाग गए; मृतक—बड़े और छोटे— सिंहासन के आगे खड़े थे। पुस्तकें खोली गईं, और एक अन्य पुस्तक खोली गई, जीवन-पुस्तक। मृतकों को उनकी कर्मों के अनुसार न्याय किया गया। फिर मृत्यु और अधोलोक को आग की झील में फेंका गया—यह दूसरी मृत्यु है। और जो जीवन-पुस्तक में नहीं लिखा मिला, वह भी आग की झील में फेंका गया।"

(प्रकाशितवाक्य 20:10–15)

संक्षेप में, नरक अँधेरा स्थान है, जहाँ विलाप, दाँत पीसना, कभी न बुझने वाली आग और दूसरी मृत्यु है। यह शाश्वत दण्ड है, पापियों के लिए परमेश्वर के क्रोध का ठिकाना।

वे क्रोध सहेंगे क्योंकि उन्होंने उसके पुत्र को ठुकराया, उस बलिदान का अपमान किया और अपने अच्छे कर्मों पर भरोसा किया। घमण्ड कितना भयानक है।

हम अनंतकाल के लिए बनाए गए हैं; हमारी आत्माएँ अमर हैं। जब शरीर मिट्टी हो जाता है, आत्मा जीती रहती है। मृत्यु तब आई जब मानव ने पाप किया। इसलिए जब हम शोक सभा में जाते हैं, हम अजीब महसूस करते हैं—अकल्पनीय विभेद के कारण। मसीहियों के पास मिलन की आशा है; अनिर्धारित लोगों के पास कोई आशा नहीं।

इसलिए क्या आप अपने कर्मों या अच्छे स्वभाव पर भरोसा करके उद्धार पाएँगे? यीशु के पूर्ण कार्य को नकारना बड़ा जोखिम है। याद रखें—नरक में लोग अपने अच्छे कर्मों पर भरोसा करके गए।

What questions do you have about eternity?

अनंतकाल के बारे में आपके क्या प्रश्न हैं?

निष्कर्ष

मैंने सुसमाचार के पांच बिन्दुओं का अध्ययन दो कारणों से किया है:
ईश्वर के प्रेम के केंद्र होने के नाते, मुझे विश्वास है कि ईश्वर को इस बात की गहरी परवाह है कि हम कैसे मरेंगे और अनंतकाल कहाँ बिताएँगे—स्वर्ग या नरक। मुझे लगता है कि हर किसी को सुसमाचार सुनने और सूचित निर्णय लेने का अधिकार है। साथ ही, मैं इस बात से चिंतित हूँ कि आज कई मिथ्या सुसमाचारों को सच्चे सुसमाचार के रूप में पढ़ाया जा रहा है।
सच्चा सुसमाचार केवल यीशु मसीह पर केंद्रित होता है।
यूहन्ना **3:16** कहता है, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।"
रोमियों **6:23** बताता है, "क्योंकि पाप का वेतन मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर की दान स्वरूप देन अनन्त जीवन है हमारे प्रभु मसीह यीशु में।" रोमियों **10:9** कहता है, "यदि तुम अपने मुख से स्वीकार करोगे कि यीशु प्रभु हैं और अपने हृदय में विश्वास करोगे कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जीवित किया, तो तुम उद्धार पाओगे।"
इन शास्त्रों को पढ़ने के बाद ध्यान दें कि यीशु मसीह शास्त्रों और सच्चे सुसमाचार का केंद्र हैं।

मिथ्या सुसमाचार स्वयं पर, आपकी खुशी पर, आपकी लालसा पर, आपके अच्छे कर्मों पर या आपके विश्वास की कमी पर ध्यान केंद्रित करते हैं। या फिर वे आपको अन्य लोगों या झूठे उद्धारकों पर केंद्रित होने को कहते हैं।

पौलुस ने लिखा **(**गलातियों **1:6–9):**

"मैं आश्चर्य करता हूँ कि तुम इतनी शीघ्र मसीह की कृपा द्वारा बुलाए जाने वाले से अलग होकर दूसरे सुसमाचार की ओर मुड़ गए हो; परन्तु वह कोई नया सुसमाचार नहीं है**—**केवल कुछ लोग तुम्हें भटका रहे हैं और मसीह के सुसमाचार को विरूपित करना चाहते हैं। पर यदि हम या स्वर्ग से कोई देवदूत तुम्हें हमारे द्वारा बताए गए सुसमाचार के विपरीत कुछ भी सुनाए, तो वह अभिशप्त हो**!**"

'अभिशप्त' का अर्थ है वह व्यक्ति जो अनंतकाल के लिए नर्कित किया जाएगा, पुनः उद्धार का कोई अवसर नहीं पाएगा।

आइए, यह हमें प्रेरित करे कि हम यीशु और सच्चे सुसमाचार को पहचानें और ईश्वर के भय में चलें। कुछ लोग सोचते हैं कि जब वे मसीही बन जाते हैं, तो उनके जीवन में अब कोई समस्या नहीं होगी, और ईश्वर के राज्य में सभी अमीर, स्वस्थ, विवाहित और संतानवाले होंगे। यदि आप यह सोचते हैं कि आपका विश्वास पर्याप्त नहीं है या कि ईश्वर आपसे नाखुश हैं, तो आप गलत हैं। जैसा डॉ॰ आर.टी. केन्डल कहते हैं, "ईश्वर ने क्रूस पर हमारे साथ न्याय किया।" जब यीशु ने हमारे स्थान पर क्रूस पर मृत्यु पाई, तो उन्होंने हमारे लिए परमेश्वर का कोप सहा।

यीशु ने कहा, "इस जगत में तुम पीड़ा में रहोगे; पर साहस रखो**!** मैंने जगत पर विजय प्राप्त कर ली।" **(**यूहन्ना **16:33)**

और पौलुस ने कोरिन्थियों को लिखा **(2** कुरिन्थियों **11:24–27):**

"यहूदियों से पाँच बार**—**उनकी उनन्मीस कोड़ों में से**—**मैंने उन्तीस कोड़े खाए; तीन बार लाठी से पीटा गया; एक बार पत्थरों से मारा गया; तीन बार जहाज़पट्टी हुई; एक दिन-एक रात गहरे पानी में बीता; अनेक यात्राएँ कीं, नदियों, डाकुओं, देशवासियों, गैर-इज़राइलियों, शहर, मरुभूमि और समुद्र में संकट भोगा; झूठे भाइयों द्वारा सताया गया; अत्यधिक परिश्रम, अनिद्रा, भूख-प्यास से गुज़रा।"

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि किसी ने पौलुस से कहा कि उसमें विश्वास की कमी थी**?** आज भी एक पूरा मंत्रालय उन मसीहियों के लिए समर्पित है जो यीशु के लिए पीड़ित हैं।

मकसद यह है कि मसीही होने का मतलब यह नहीं कि कठिनाइयाँ समाप्त हो जाएँगी। हमें पारिवारिक, आर्थिक, स्वास्थ्य और कार्यस्थल की समस्याएँ आएँगी। यह जीवन का हिस्सा है, और पवित्र आत्मा हमें सामना करना सिखाएगा। जब तक शैतान और उसके दूत आग की झील में नहीं हैं, तब तक हम आध्यात्मिक युद्ध में हैं। वे हमें परेशान करते हैं ताकि हम सुसमाचार बाँटने से निरुत्साहित हो जाएँ।

सच्चा सुसमाचार क्या वादा करता है**?**

- क्षमा
- यीशु और परम पिता के साथ पवित्र आत्मा द्वारा संबंध
- परमेश्वर के साथ शांति, उनकी संतान होने का आश्वासन, और हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति
- शैतान के राज्य से मुक्ति
- यह कि स्वर्ग हमारा सच्चा घर है
- यह कि यीशु युगांत तक हमारे साथ रहेगा
- कठिनाइयाँ आएँगी, पर जो विजयी होंगे, वे उद्धार पाएँगे

इसलिए प्रार्थना करें और यीशु से दृढ़ विश्वास की याचना करें।

याद रखें, कठिनाइयाँ असामान्य नहीं हैं—यह जीवन है। यीशु वादा करते हैं कि वे सदा हमारे साथ रहेंगे; इसलिए हम कभी अकेले नहीं हैं। विश्वास बनाए रखें, और उन भाइयों-बहनों के लिए प्रार्थना करें जो विश्वास के कारण प्रताड़ित हो रहे हैं।

यदि आपको यह पुस्तिका पसंद आई, तो इसे उन लोगों को दें जिन्हें इसकी आवश्यकता हो सकती है। या इसे साक्षी देने के लिए उपकरण के तौर पर प्रयोग करें। आप इसे सुसमाचार बाँटने के लिए प्रत्येक बिन्दु के रूप में उपयोग कर सकते हैं।

पढ़ने के लिए आपका धन्यवाद। परमेश्वर आपका भला करे!

John F. Bonnell